

---

# Gomantra Patha

---

## गोमन्त्रपाठः

---

### Document Information



---

Text title : Gomantrapatha

File name : gomantrapAThaH.itx

Category : devii, otherforms, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Megha Jogithaya

Proofread by : Megha Jogithaya

Description/comments : From surabhiyAgapaddhatiH

Latest update : July 3, 2021

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 3, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



गोमन्त्रपाठः

बहुले समङ्गे ह्यकुतोभये च  
क्षेमे च सख्येव हि भूयसी च ।  
यथा पुरा ब्रह्मपुरे सवत्सा  
शतक्रतोर्वज्रधरस्य यज्ञे ॥ १ ॥

भूयश्च या विष्णुपदे स्थिता या  
विभावसोश्चापि पथे स्थिता या ।  
देवाश्च सर्वे सह नारदेन  
प्रकुर्वते सर्वसहेति नाम ॥ २ ॥

मन्त्रेणैतेनाभिवन्देत यो वै  
विमुच्यते पापकृतेन कर्मणा ।  
लोकानवाप्नोति पुरन्दरस्य  
गवां फलं चन्द्रमसो द्युतिं च ॥ ३ ॥


एतं हि मन्त्रं त्रिदशाभिजुष्टं  
पठेत यः पर्वसु गोष्ठमध्ये ।  
न तस्य पापं न भयं न शोकः  
सहस्रनेत्रस्य च याति लोकम् ॥ ४ ॥

इति गोमन्त्रपाठः समाप्तः ।

श्रीसुरभियागपद्धतिः ।

Encoded and proofread by Megha Jogithaya

pdf was typeset on July 3, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

